Toppersnotes
Unleash the topper in you

ACF-RANGER

सहायक वन सरंक्षक /वन रेंज ऑफिसर ग्रेड – 1

भूगोल

(भारत एवं राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

भारत एवं राजस्थान का भूगोल

1. भारत का विस्तार 1

2. भारत के भौगोलिक भू-भाग (हिमालय) 6

3. उत्तरी मैदानी प्रदेश 15

4. प्रायद्वीप पठारी प्रदेश 19

5. तटवर्ती मैदान 28

6. द्वीपीय समूह 32

7. भारतीय मानसून 34

8. उष्ण कटिबंधीय चक्रवात 42

9. भारत का अपवाह तंत्र 44

10.भारत में प्राकृतिक वनस्पति 55

11.जैव विविधता 60

12.भारत की मिट्टी/मृदा 65

13.जलवायु 72

14.भारत में खनिजों का वितरण 89

15.भारत के प्रमुख उद्योग 99

16.कृषि 104

राजस्थान का भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति 107

2. राजस्थान के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थानों की वर्तमान स्थिति 115

3. राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग 119

4. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश 128

5. पूर्वी मैदानी प्रदेश 133

6. दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश/हडौती प्रदेश 136

7. राजस्थान की जलवायु 139

8. राजस्थान में वन-संसाधन एवं वनस्पति 151

9. राजस्थान में खनिज संसाधन 157

10.ऊर्जा के स्त्रोत 166

11.राजस्थान में पशुधन 171

12.राजस्थान में कृषि 178

13.जनसंख्या 184

14.राष्ट्रीय उद्यान 190

15.राजस्थान में जल विद्युत परियोजनायें 195

16.अपवाह तंत्र 204

17.राजस्थान की झील 217

18.सिंचाई परियोजनायें 222

19.राजस्थान की मिट्टियाँ 229

20.सूखा एवं बाढ (भारत) 232

भारत एवं राजस्थान का भूगोल

भारतीय भूगोल
(Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत का अक्षांशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है । परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।
- भारत का क्षेत्रफल = 3287263 किमी.^{2} = लगभग 32.8 लाख किमी.^{2}
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षेत्रफल वाले देश–
  - **Russia**
  - **Canada**
  - **China**
  - **USA**
  - **Brazil**
  - **Australia**
  - **India**
  - **Argentina**
  - **Kazakhstan**
  - **Algeria**
- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है ।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का दूसरा स्थान है ।

Impact of Latitude:-

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है ।
- कर्क रेखा भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है– भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है ।
- फिर भी भारत में ऊष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है ।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है ।
  - **Gujarat**
  - **Rajasthan**
  - **Madhya Pradesh**
  - **Chhattisgarh**
  - **Jharkhand**
  - **West Bengal**
  - **Tripura**
  - **Mizoram**

Impact of Longitudinal Extension:-

- भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है ।
- 82½°E देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है ।
- भारत का समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।
- 82½°E निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है:-
- **Uttar Pradesh**
- **Madhya Pradesh**
- **Chhattisgarh**
- **Odisha**
- **Andhra Pradesh**

Q.1 क्या उत्तर-पूर्वी राज्यों को एक पृथक समय दिया जाना चाहिए ?

Ans. उत्तर-पूर्वी राज्यों की जनता की यह माँग रही है कि उन्हें पृथक समय दिया जाए क्योंकि भारत के समय से उनका समय आगे होने के कारण उनकी दिनचर्या पर नकारात्मक प्रभाव पडता है ।

पृथक समय के पक्ष में निम्नलिखित तर्क है:-

(i). समय का उनकी जैविक घडी के अनुसार होना उन लोगों की कार्यक्षमता को बढाएगा।

(ii). इससे लगभग 2.3 अरब यूनिट बिजली की बचत होगी।

(iii). उत्तर-पूर्वी राज्यों की जैव विविधता के लिए यह सकारात्मक होगा ।

(iv). यदि उनकी यह माँग मान ली जाए तो उत्तर-पूर्वी राज्यों का विश्वास केन्द्र सरकार में बढेगा ।

(v). पहले भी उत्तर-पूर्वी राज्यों में चाय-बागानी समय था । उसी के अनुसार अब भी उनके लिए पृथक समय रखा जा सकता है

पृथक समय के विपक्ष में तर्क:-

(i). पृथक समय से उत्तर-पूर्वी राज्यों में अलगाववादी भावना बढेगी।

(ii). भारत में अभी शिक्षा तथा जागरूकता कम होने के कारण अव्यवस्था की स्थिति बन सकती है । यदि समय में परिवर्तन किया गया।

(iii). परिवहन से संबंधित समस्या उत्पन्न हो सकती है ।

(iv). विभिन्न कार्यस्थलों के बीच समय बिगड सकता है ।

निष्कर्ष:-

- हाल ही में गुवाहाटी कोर्ट का फैसला इस मुद्दे का उचित समाधान हो सकता है । गुवाहाटी न्यायालय के अनुसार उत्तर-पूर्वी राज्यों की पृथक् समय की माँग उचित है लेकिन उन्हें पृथक समय देने का यह उचित समय नहीं है । पृथक समय के स्थान पर उत्तर-पूर्वी राज्यों में दिन के प्रकाश की बचत **(Day Light Saving)** की जा सकती है ।
- 2007 में **National Institute of Advanced Studies** ने उत्तर पूर्व के समय को आधा घंटा आगे करने का सुझाव था। अतः इस सुझाव पर अमल किया जा सकता है ।

Border of India:-

1. स्थलीय सीमा:-

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है ।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती है:-

(i). Bangladesh = 4096.7 km
(ii). China = 3488 km
(iii). Pakistan = 3323 km
(iv). Nepal = 1751 km
(v). Myanmar = 1643 km
(vi). Bhutan = 699 km
(vii). Afghanistan = 106 km

- भारत-पाकिस्तान सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा
- भारत-चीन सीमा रेखा = मैकमोहन
- भारत-अफगानिस्तान सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमा:-

- भारत की जलीय सीमा = 7516.6 किमी.
  Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km
- सर्वाधिक तटीय सीमा वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश:-
  - Andaman & Nicobar
  - Gujarat
  - Andhra Pradesh
  - Tamilnadu
  - Maharashtra
  - Kerala
  - Odisha

- Karnataka
- West Bengal
- Lakshadweep
- Goa
- Puducherry
- Daman & div

तटवर्ती/सीमावर्ती सागरः-

1. सीमावर्ती सागर **(Territorial Sea)**

2. संलग्न सागर **(Contiguous Sea)**

3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र **(Exclusive Economic Zone)**

1. सीमावर्ती सागरः-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

2. संलग्न सागरः-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 24**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।
- यहाँ भारत सीमा शुल्क **(Custom Duty)** वसूल सकता है ।

3. अनन्य आर्थिक क्षेत्रः-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है।
- इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।

  उच्च सागरः- यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है ।

तटवर्ती सीमा के लाभः-

- तटवर्ती सीमा दक्षिण भारत में समकारी जलवायु **(Moderate Climate)** का निर्माण करती है ।
- तटवर्ती सीमा बन्दरगाहों के निर्माण के लिए उपयोगी है । इन बन्दरगाहों के माध्यम से आयात-निर्यात व्यापार किया जाता है ।
- तटवर्ती सीमा भारत को विभिन्न देशों से जोडती है ।
- पर्यटन की दृष्टि से भी यह उपयोगी होती है ।
- महासागरीय संसाधनों तक तटवर्ती सीमा पहुँच बनाती है ।
- सुरक्षा की दृष्टि से भी तटवर्ती सीमा महत्वपूर्ण है ।

तटवर्ती सीमा के नुकसान:-

- सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पडता है ।
- समुद्री लुटेरों, तस्करी आदि का भी डर बना रहता है ।
- तटवर्ती सीमा के रखरखाव एवं सुरक्षा के लिए अतिरिक्त व्यय करना पडता है ।

निष्कर्ष:-तटवर्ती सीमा के नकारात्मक प्रभाव होने के बावजूद यह भारत के लिए लाभकारी है ।

भारतीय उपमहाद्वीप **(Indian Subcontinent):-**

- उपमहाद्वीपीय उस भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता हो ।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है ।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित है जैसे - हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकनयोगा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते है ।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित है जो भारत तथा पडौसी देशों को पृथक पहचान दिलाता है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित है:-

➢ **INDIA**	➢ **Bhutan**
➢ **Pakistan**	➢ **Bangladesh**
➢ **Afghanistan**	➢ **Shri Lanka**
➢ **Nepal**	➢ **Maldives**

भारत के भौगोलिक भू–भाग
(Physical Division of India)

भारत के भौगोलिक भू–भाग:–

1. **Himalayan Mountain Region**
2. **Northern Plain Region**
3. **Peninsula Plateau Region**
4. **Coastal Plain Region**
5. **Island Groups Region**

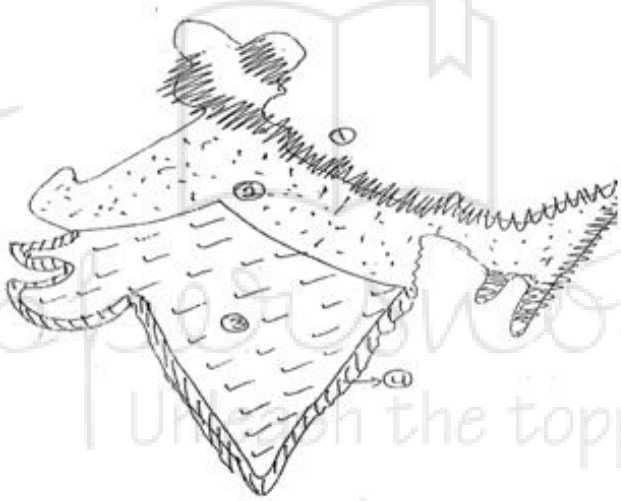

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश:–

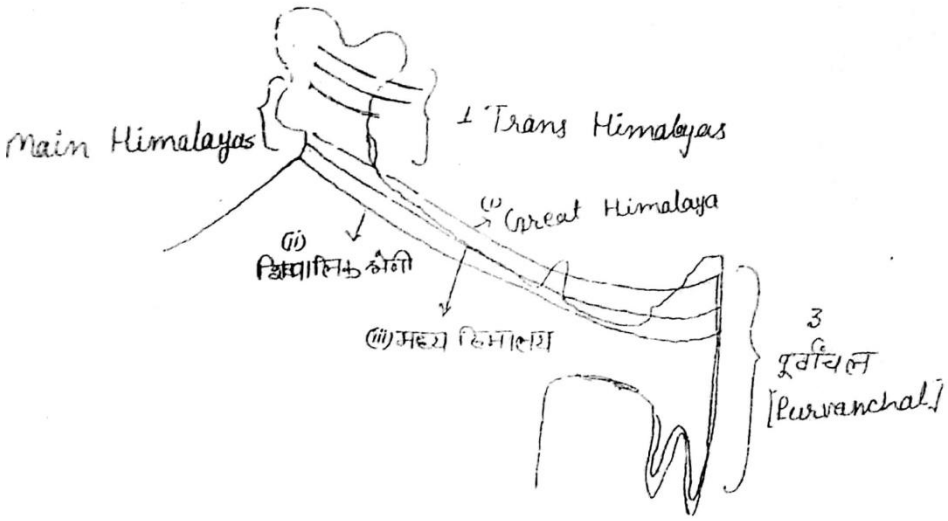

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- क्योंकि इस पर्वत तंत्र का निर्माण टरशरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शयरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शयरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

A. <u>Trans Himalaya:-</u>

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:–

(a) काराकोरम श्रेणी:–

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।
- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है:–

1. बतुरा
2. हिस्पार
3. बियाको
4. बालतोरो
5. सियाचिन

- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) लद्दाख श्रेणी:–

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार **'कैलाश पर्वत'** के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में **'मानसरोवर झील'** स्थित है ।
- **'रकापोशी चोटी'** इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है ।

(c) जास्कर श्रेणी:–

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note:- लद्दाख पठार:–

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है, तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक **'ठण्डे मरूस्थल'** का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

B. Main Himalaya:-

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ है:–

(i). वृहत हिमालय **(Great Himalaya)**
(ii). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya)**
(iii). शिवालिक **(Shivalik)**

(a). वृहत हिमालय(Great Himalaya):-

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी से विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एंव औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल–चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान

etc.

- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।
- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रेः–

➢ **Burzila**	➢ **Niti**
➢ **Zajila**	➢ **Lipu Lekh**
➢ **Baralachha**	➢ **Nathula**
➢ **Shipkila**	➢ **Jaleepla**
➢ **Mana**	➢ **Bomdil**

(i). बुर्जिला दर्राः–

* यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से घुरूपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). जोजिला दर्राः–

* यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
* इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बारालच्छा दर्राः– यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्राः–

* यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
* इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). नीतिः– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). लिपुलेख दर्राः–

* यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है । अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्राः-

* यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोड़ता है ।
* इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
* इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
* मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जलीपला दर्राः- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोड़ता है ।

(x). बोमडिला दर्राः- यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोड़ता है ।

(b). मध्य हिमालय (Middle Himalaya):-

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते हैं ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700-4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैः-

➢ **J & K – Pir Panjal**
➢ **Himachal Pradesh – Dhauladhar**
➢ **Uttarakhand - Mussoorie/Nag Tibba**
➢ **Nepal – Mahabharat**
➢ **Sikkim – Dokya**
➢ **Bhutan – Black Mountain**

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैः-

➢ कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय - पीर पंजाल
➢ कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय - धौलाधर
➢ कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत हिमालय - मसूरी
➢ काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय - महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते हैं । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते हैं ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते हैं । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं :-

1 पीरपंजाल दर्रा:–यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।

2 बनिहाल दर्रा:– श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

ऋतु प्रवास **(Transhumance):-**

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते है ।, उसे ऋतु प्रवास कहा जाता है ।
- जम्मू–कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते है ।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते है ।

करेवा **(Karewa):-**

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते है ।
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** है । इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

(C) शिवालिक **(Shivalik):-**

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–
  - **J & K – Jammu Hills**
  - **Uttarakhand – Dudwa/Dhang** (दूदवा/धांग)
  - **Nepal – Churiaghat** (चूडियाघाट)
  - **A.P. – Dafla** (दाफला)
  - **Miri** (मिरी)
  - **Abhor** (अबोर)
  - **Mishmi** (मिश्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गई जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में **'दून'** तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में **'द्वार'** कहते है ।
  e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos):-

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते है ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

C. पूर्वांचल (Purvanchal):-

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाडियों को पूर्वांचल कहते है ।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ।
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाडियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित है ।
- नागा पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है ।
- मिजो पहाडियों को लुसाई पहाडियाँ भी कहते है ।
- मिजो पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है ।
- बराइल श्रेणी नागा पहाडियों एवं मणिपुर पहाडियों को अलग करती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजनः-

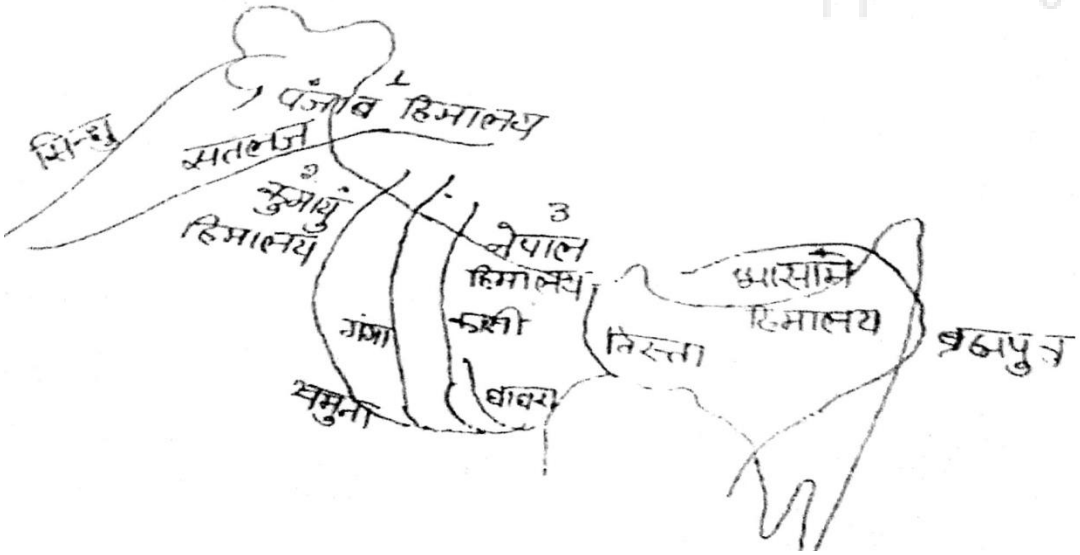

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय **(Kashmir/Punjab Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है । जो लगभग 250–400 किमी. के बीच पाई जाती है ।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है ।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है । **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल ।

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya):-**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है।**e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)
- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।

हिमालय का महत्वः–

1. हिमालय पर्वत भारत को प्राकृतिक सीमा प्रदान करता है जिसके कारण भारत को एक उपमहाद्वीप की संज्ञा प्राप्त होती है ।
2. भारत की जलवायु पर भी हिमालय पर्वत का प्रभाव रहता है । हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है । यह मानसून पवनों को भारत में वर्षा करने के लिए बाध्य करते है
3. हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है । यहाँ बहुत अधिक जैव विविधता पाई जाती है ।
4. यहाँ बहुत से हिमनद स्थित है जिनसे भारत की प्रमुख नदियों का उद्गम होता है ।
5. हिमालय का धार्मिक महत्व भी है । हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में बहुत से तीर्थस्थल स्थित है ।
6. पर्यटन की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ बहुत से पर्वतीय स्थल **(Hill Station)** स्थित है ।

- करेवा
- चोरू
- सियाचिन हिमनद
- नुवा घाटी
- उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
- ट्रांस हिमालय
- वृहत् हिमालय
- मध्य हिमालय
- शिवालिक
- पूर्वांचल
- हिमालय का महत्व
- हिमालय का प्रादेशिक विभाजन

→ महत्वपूर्ण प्रश्न

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2. उत्तरी मैदानी प्रदेशः-

- इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदान है ।
- यह भारत का नवीनतम प्रदेश है ।
- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।

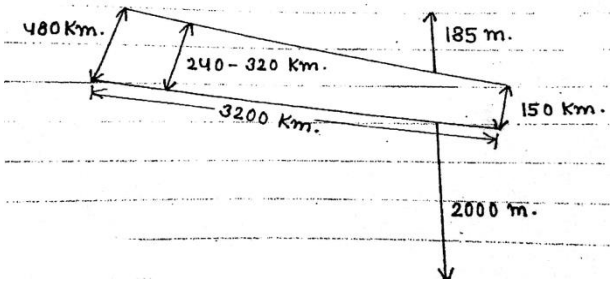

- यह प्रदेश 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240–320 किमी. पाई जाती है ।
- इन मैदानों में जलोढ अवसादों का जमाव 2000 मी. की गहराई तक पाया जाता है ।
- यह समतल मैदान है जिनका ढाल मन्द है ।

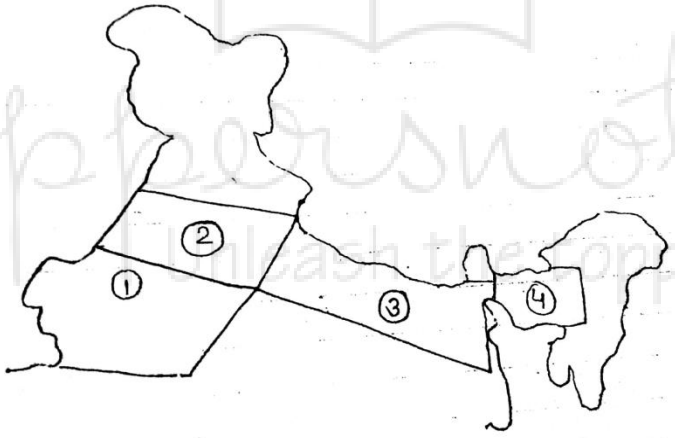

1. राजस्थान के मैदानः-

- राजस्थान में अरावली पर्वतों के पश्चिम में स्थित मैदानी क्षेत्र।
- इस क्षेत्र में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- वर्षा के आधार पर इस भाग को दो उपभागों में विभाजित किया जाता है ।

(i). अरावली पर्वत तथा 25 सेमी. समवर्षा रेखा के मध्य स्थित भाग में अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह भाग 'राजस्थान बागर' कहलाता है । (25 से 50 सेमी. वर्षा)

(ii). 25 सेमी. समवर्षा रेखा तथा 'रेड क्लिफ रेखा' के मध्य स्थित भाग, जहाँ मरूस्थलीय परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह क्षेत्र 'मरूस्थलीय' कहलाता है । (25 सेमी. से कम वर्षा)

- 'लूनी' इस मैदानी क्षेत्र की सबसे प्रमुख नदी है, जो कि उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पूर्व दिशा की ओर बहती है ।
- इस क्षेत्र में बहुत सी लवणीय झीलें पाई जाती है । जैसेः- सांभर, लूणकरणसर, डीडवाना,पचपदरा